4

नादाब

गलत असल की एक नकल

वचन: 1 राजाओं 15:25-31

परमेश्वर ने जीवन के वस्त्र के बीच में ही यह सच्चाई बुनी है कि बच्चे आमतौर पर वैसे ही बन जाएंगे, जैसी शिक्षा माता-पिता उन्हें देते और उनके सामने नमूना रखते हैं। उनके सामने परमेश्वर का सुसमाचार रखो या शैतान और इस संसार की शिक्षा, यह बात दोनों स्थितियों में लागू होती हैं। जिस हालात में वे रहते हैं, वैसे ही वे बन जाते हैं, इसलिए माता-पिता के लिए बच्चों के साथ इस अहसास के साथ रहना आवश्यक है कि उनके बच्चे अधिकतर उनके जैसे ही बनें। हमारे घर की चारदीवारी के अन्दर क्या चल रहा है, उस सबको बताने के लिए हमारे बच्चे उस सबका आईना हैं। माता-पिता पर जाने की पुरानी कहावत है, ''जैसा बाप वैसा बेटा; जैसी मां वैसी बेटी।''

बच्चे आमतौर पर उसकी उतनी नकल नहीं करते, जो हम कहते या करते हैं, जितनी इसकी कि हम क्या हैं। मुझे अपने आप से जो बड़ा प्रश्न पूछना है, वह जीवन की तह तक सीधे जाता है, कि ''भीतर कहीं, जहां परमेश्वर के सिवाय और कोई नहीं देखता, मैं असल में क्या हूं?'' इस प्रश्न का उत्तर देने के बाद मैं ऐसा ही एक प्रश्न पूछता हूं और उत्तर देता हूं: ''मैं क्या बनूंगा?'' परमेश्वर द्वारा ठहराए डिजाइन के अनुसार बच्चे वैसे बनेंगे, जैसा नमूना हम उनको देंगे।

परमेश्वर ने माता-पिता को जीवन को प्रभावित करने वाला प्रभाव दिया है ताकि वे इसका इस्तेमाल अपने बच्चों को ज़िम्मेदार मसीही जीवन बिताने के लिए अगुआई में कर सकें (नीतिवचन 22:6; इफिसियों 6:1, 2)। इसका अर्थ यह हुआ कि बच्चों को सिखाने का बेहतरीन समय घर में होता है, जब वे बढ़ रहे हों। बाद में सिखाने की कोशिश बेकार हो सकती है। जब बच्चे हर रोज़ देखते और अपने माता-पिता के जीवनों में मसीह के साथ जीते हैं तो कई बार जीवनभर के लिए वह उनकी सोच और जीवन शैली का भाग बन जाता है।

बातचीत करना भी सही है। जब बच्चे आत्मिक उदासीनता या बुराई को अपने आस-पास देखते हैं तो वे वैसे ही बन जाते हैं, जिस माहौल में रहते हैं। कोई बच्चा उस अनादर भरे पारिवारिक जीवन से, जिसमें वह रह रहा था, ऊपर उठ सकता है और कोई अपने आस-पास के आत्मिक स्तर में नीचे गिर सकता है; परन्तु अधिकतर वह वही बनता है, जो उसे सिखाया गया हो।

हमारा मन उस लड़के के लिए दु:खी होता है, जिसका पिता बदमाश है। वह लड़का दो तरह से श्रापित है। उसके पारिवारिक जीवन में कमी है, क्योंकि उसे खुशहाल बचपन को मिलने वाला आत्मिक माहौल नहीं मिलेगा, जो केवल पिता ही उसे दे सकता है। उसका व्यस्क जीवन परेशानियों से भरा होगा क्योंकि उसे अगुआई, यादों, प्रोत्साहन और उस अच्छे बोध के बिना रहना होगा, जो अच्छे पिता/पुत्र सम्बन्ध से उसके वयस्क जीवन का आधार बनने वाले आरम्भिक वर्षों

में मिल सकता था। इससे भी अफसोसनाक बात लड़के के पिता का मसीही न होना है।

इस्राएल के दूसरे राजा नादाब को जीवन विनाशकारी हालत में मिला यानी उसका पिता एक धार्मिक पापी था। यदि किसी को अपने पिता से अधिक नहीं मिलता और वह अपने पिता जैसा ही बन जाता है तो स्पष्टतया उसके पास अधिक नहीं होगा। एक वाक्य में नादाब के जीवन की यही कहानी है। उसके पिता यारोबाम ने जैसा कि हमने देखा, एक बात की कि उसने इस्राएल से पाप करवाया। नादाब ने 910 से 909 ई.पू. तक केवल दो से कम वर्ष राज किया (15:25) और उसका थोड़ी देर का शासन यारोबाम के राजवंश का अन्तिम रिरियाना था। नादाब की मृत्यु के साथ ही यारोबाम के घराने के शासन का अन्त अहिय्याह की भविष्यवाणी के अनुसार हो गया (15:29)।

नादाब के अपने पिता की गद्दी पर बैठने के समय, दक्षिणी राज्य के राजा के रूप में आसा का दूसरा वर्ष था (15:25)। नादाब के बारे में केवल सात आयतों में बताया गया है, और उसके बारे में बताने के लिए इतनी ही आयतों की आवश्यकता थी। उसके जीवन के बारे में लिखना कागज़ और स्याही बर्बाद करने वाली बात ही थी। उसके बारे में इसके अलावा कहने को और कुछ नहीं था कि उसने अपने पिता वाले काम ही किए। यही काफ़ी है। इसी से उसके बारे में सब कुछ पता चल जाता है।

किसी ने कहा है कि हर आदमी पैदा तो असल होता है, लेकिन मरता किसी की नकल है। अधिकतर लोग जीवन के आरम्भ में नकलें बन जाते हैं। वे अपने माता-पिता की नकलें बन जाते हैं। यदि माता-पिता परमेश्वर का भय रखने वाले हैं तो इसमें कोई बुराई नहीं है। परन्तु यदि वे भले लोग नहीं हैं तो यह एक महा विपत्ति है। जैसा कि बच्चों में होता है, नादाब अपने पिता जैसा बन गया। उसका पिता एक बढ़ी हुई मानवीय गलती था, इसलिए नादाब भी गलत असल की नकल था! क्योंकि असल बुरा था, इसलिए नकल भी बुरा था।

ध्यान से देखें कि यह कैसे था और रोएं!

परमेश्वर के प्रति अपने व्यवहार में

वचन कहता है कि व्यवहार में नादाब अपने पिता के पद चिह्नों पर चला:

> उस ने वह काम किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था और अपने पिता के मार्ग पर वही पाप करता हुआ चलता रहा, जो उसने इस्राएल से करवाया था (15:26)।

''वही पाप ... जो उसने इस्राएल से कराया था'' वाक्यांश उत्तरी राज्य के सभी उन्नीस शासकों के बारे में अलग-अलग तरह से दोहराया गया।[1] यह पूजा के लिए सोने के बछड़े के केन्द्रों का इस्तेमाल करने के पाप और यारोबाम द्वारा बनाए गए धार्मिक प्रबन्ध में बने रहने की बात है। नादाब ने आराधना का यह ढंग तो नहीं बनवाया, परन्तु वह यह झूठी आराधना करता रहा और उसने इसे बन्द नहीं किया। परमेश्वर ने नादाब को उसके कार्यों के लिए ज़िम्मेदार ठहराया। उसके हाथ में इस झूठी आराधना को रोकने की शक्ति थी, परन्तु उसने इसे नहीं रोका। यह गलती केवल नादाब ने ही नहीं, बल्कि नादाब के बाद आने वाले हर राजा ने की। परमेश्वर ने उन्हें इस पाप के

लिए हर बार डांटा।

माता-पिता के लिए यह अहसास कितना गम्भीर होना चाहिए कि हमारे बच्चे पहले हमारे माध्यम से परमेश्वर को देखेंगे! लड़का हो या लड़की, मां की गोद में उसे बाइबल पढ़ना और परमेश्वर के बारे में ज्ञान अपने आप नहीं आ जाएगा; उन्हें परमेश्वर के प्रति अगुआई के लिए अपने माता-पिता पर निर्भर रहना पड़ता है। माता-पिता वे लैंस हैं, जिन में से छोटे बच्चों को परमेश्वर को देखना चाहिए। परमेश्वर के प्रति हमारा दृष्टिकोण अपने बच्चों की बाल्य अवस्था में उनका दृष्टिकोण बन जाता है। हमारी समझ सही हो या गलत, हमारे बच्चे वही मानेंगे जो हम परमेश्वर के बारे में कहते या करते हैं। इससे पहले कि वे अपने दिमाग और दिल से परमेश्वर को देखें, वे हमारी आंखों से उसे देखते हैं।

बाद में जब वे खुद सोचना आरम्भ करते हैं तो वे उस सब के द्वारा तर्क करने लगते हैं जो उन्होंने हम में देखा होता है और जो हमने उन्हें परमेश्वर के बारे में सिखाया होता है। अन्ततः उनके सही विश्वास और वयस्क जीवनों से दिखाई देता है कि हमने उनके सामने अपना जीवन कैसे बिताया है, यानी उन्होंने हमारे अन्दर क्या देखा, हमने उन्हें क्या पढ़ने और क्या सोचने के लिए कहा और हमने उन्हें क्या शिक्षा दी है। उनका अपना दिमाग होगा और अपना-अपना जीवन, परन्तु उनके जीवनों के आरम्भिक चौदह से सोलह वर्षों में हम उनके दिल और दिमाग को आकार देने में परमेश्वर की सहायता करते हैं।

चाहे वह फिरौन के महल में राजकुमार के रूप में बड़ा होने के बावजूद मूसा की मां को उसे तीन या इससे अधिक साल पालने और सिखाने का अवसर मिला था (निर्गमन 2:8)। मूसा के बड़ा होकर पुरुष बनने से पहले के वर्षों में वह अन्य अवसरों पर भी उससे मिली होगी। वह चाहता तो मिस्र की शान, सोने और ठाठ-बाठ को चुन सकता था। वह फिरौन बनकर पूरे मिस्र पर राज कर सकता था, परन्तु चालीस वर्ष की उम्र में उसने इस्राएली होना और इस्राएली जाति के साथ दुःख उठाना चुना (इब्रानियों 11:24-26)। यह पसन्द चुनने के पीछे स्पष्ट कारण वह शिक्षा थी, जो उसे उसकी मां से मिली थी। मिस्र की सारी शिक्षा चाहे वह कितनी भी भयभीत करने वाली थी, परमेश्वर के बारे में उन शिक्षाओं को उसके मन से न निकाल पाई, जो बचपन में मूसा को दी गई थी।

नादाब के सामने एक सिंहासन और अगुआई के लिए एक कौम थी। वह बड़ा हो गया था। उसे नेतृत्व की भूमिका निभानी थी। इतिहास में लिखा जाना था कि वह कैसा जीवन जीया, उसने क्या किया और कौम को किस दिशा में ले गया। इस पल के लिए उसने कैसे तैयारी की थी? कई तरह से और कई ढंगों से उसकी तैयारी हुई थी, परन्तु उसकी मुख्य शिक्षा जीवन की एक फिल्म से हुई थी, जिसे वह अपने पिता यारोबाम के प्रोजेक्टर से बचपन से देखता आ रहा था। कौम की अगुआई की उसकी सोच उसे यारोबाम से मिली थी। क्या नादाब को उसका अनुसरण करना चाहिए था, या कोई और रास्ता चुनना चाहिए था? इसका उत्तर जो उसने बाइबल के पाठकों के देखने के लिए पवित्र आत्मा के द्वारा दिया, वह यह है कि वह "अपने पिता के मार्ग पर ... चलता रहा" (15:26)।

इस्राएल को जितनी आवश्यकता, करों से छूट, अतिरिक्त क्षेत्र या बड़ी सेना की थी, उससे कहीं अधिक उसकी आवश्यकता धार्मिकता के मार्ग में अगुआई की थी। नादाब को यह आवश्यकता

दिखाई नहीं दी। जीवन के बड़े मुद्दे वही थे, जिन्हें यारोबाम महत्वपूर्ण मानता था। जब उसके अन्त का दिन आया तो उसने अपने पिता का अनुसरण करते हुए विनाशकारी मार्ग चुना।

मनुष्य के प्रति अपने काम में

नादाब ने जो कुछ दान, बेतेल और ऊंचे स्थानों का किया, उससे नादाब का धार्मिक पक्ष गड़बड़ा जाता है, परन्तु उसके और कामों के बारे में क्या कहा जा सकता है ? यह एक दिलचस्प प्रश्न है। आप कह सकते हैं कि उसने अन्य बातों में भी अपने पिता की ही नकल की। वचन में नादाब के जीवन की केवल एक घटना दी गई है। स्पष्टतया उसके कामों के बारे में बताने का लाभ नहीं था। जीवन में ऐसा ही होता है। अंग्रेज़ी के *g-o-o-d* में से *G-o-d* को निकाल दें तो *o* यानी शून्य रह जाता है। मनुष्य के जीवन में से धार्मिकता को निकाल दें, तो वह राजा हो या रंक, बैंकर या बेकर, कुछ भी नहीं रहेगा। यारोबाम के साथ ऐसा ही हुआ और नादाब के साथ भी।

उसकी कुछ लड़ाइयों के अलावा यारोबाम के बारे में अधिक कुछ नहीं कहा गया (2 इतिहास 13:19)। यारोबाम के बारे में हमारा ध्यान जिस मुख्य बात पर दिलाया गया है, वह यह है कि उसने अपना ही धर्म स्थापित किया। उसका पुत्र उसके पद चिह्नों पर चला। नादाब के शासन के कार्य का एकमात्र रिकॉर्ड दान के इलाके के नगर गिब्बतोन पर कब्जे की बात ही है (15:28)। लेवियों ने जिनका यह इलाका था, इसे छोड़ दिया था। लेवी दक्षिणी राज्य में चले गए थे और समय बीतने के साथ, गिब्बतोन पर फिलिस्तिनियों ने फिर से कब्जा कर लिया था। यह दिखाता है कि असली याजकों ने सोने के बछड़ों और आराधना के नये स्थानों को स्वीकृति नहीं दी। उनके पास दक्षिणी राज्य में जाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था, जहां वे परमेश्वर की ईश्वरीय योजना के अनुसार सेवा और आराधना कर सकते थे। इस समय गिब्बतोन पर फिलिस्तिनियों का कब्ज़ा था और नादाब ने इसे छुड़ाने की कोशिश की थी।

इस कारण नादाब का शासन थोड़ी देर का और महत्वहीन था। उसने कौम को गलत दिशा दी। उसका शासन गुण रहित था और उसका नाम भुला दिया गया है। बाइबल के कुछ ही विद्वानों को याद होगा कि बाइबल में उसके बारे में क्या कहा गया है।

मरने के बाद हम अपने रिश्तेदारों के बीच में थोड़ी देर के लिए चर्चा का विषय बनेंगे। परन्तु जल्द ही हमारे नाम उनके दिलो-दिमाग से सदा के लिए निकल जाएंगे। शारीरिक रूप में ही नहीं, पूरी तरह से हमें इस पृथ्वी से *गुजर जाना* है। इस अहसास के लिए केवल एक ही तसल्ली की बात है कि परमेश्वर के भय में बिताया गया जीवन उन भले कार्यों को बनाए रखता है जो हमारे जाने के बाद भी याद रहते हैं और हमारे नाम और याद मिट जाने के बावजूद हमारे काम को संसार में जीवित रखते हैं (प्रकाशितवाक्य 14:13)। यहां पर परमेश्वर के बाहर रहकर जीवन बिताने वाले व्यक्ति को भुला दिया जाएगा और उसके जीवन का परिणाम आशीष के लिए नहीं, बल्कि शाप के लिए रहेगा।

अन्त में अपनी हत्या में

नादाब के जीवन का अन्त कैसे हुआ ? दिल थाम कर बैठ जाएं। जब किसी का जीवन उसके पिता जैसा होता है, तो उसकी मौत भी अपने पिता की तरह ही होगी। जिस प्रकार का जीवन हम

जीते हैं, वह हमारे जनाज़े में किया जाने वाला प्रचार है।

नादाब राजा के रूप में किसी काम का नहीं था, जिस कारण जल्द उसके मातहतों ने उसके राज्य पर कब्जा कर लिया। नादाब के सेनापति बाशा ने उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचकर उसकी हत्या कर दी और शासन पर कब्जा कर लिया। यह सुनिश्चित करने के लिए कि यारोबाम के घर में से उसकी गद्दी का वारिस न रह जाए, बाशा ने फुर्ती से यारोबाम के घराने को मार डाला। इस प्रकार अहिय्याह की भविष्यवाणी पूरी हुई:

> राजा होते ही बाशा ने यारोबाम के समस्त घराने को मार डाला; उसने यारोबाम के वंश को यहां तक नष्ट किया कि एक भी जीवित न रहा। यह सब यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ जो उस ने अपने दास शीलो वासी अहिय्याह से कहलवाया था। यह इस कारण हुआ कि यारोबाम ने स्वयं पाप किए, और इस्राएल से भी करवाए थे, और उस ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोधित किया था (15:29, 30)।

अहिय्याह ने यारोबाम की पत्नी के पास भविष्यवाणी की थी कि परमेश्वर एक राजा को खड़ा करेगा जो यारोबाम के घराने को मिटा डालेगा (14:12-16)। बाशा के द्वारा परमेश्वर ने इस भविष्यवाणी को पूरा किया।

अन्त में यारोबाम का न्याय किया गया और परमेश्वर ने उसे मारा। अन्त में नादाब का न्याय किया गया और परमेश्वर ने बाशा को उसकी हत्या करने की अनुमति दी। बुराई का बदला मिल ही जाता है। दुष्ट व्यक्ति का जीवन दु:ख भरा है, परन्तु उसकी मृत्यु मन फिराव के बिना महाविनाश है!

1 और 2 राजाओं की एक दिलचस्प विशेषता यह है कि अपने आत्मा के द्वारा परमेश्वर हमें दृश्यों के पीछे ले जाता है और हमें बताता है कि जो कुछ हुआ वह ऐसे क्यों हुआ। हमें बताया गया है कि यारोबाम मरा ही नहीं; परमेश्वर ने उसे मारा। नादाब की मृत्यु केवल एक हत्या नहीं थी; यह उसके जीवन का परमेश्वर की ओर से न्याय था! मनुष्य केवल एक घटना को अपनी शारीरिक आंखों से देखता है, परन्तु उस घटना के पीछे परमेश्वर का बड़ा उपाय कोई बड़ी प्राप्ति कर रहा हो सकता है या उससे कुछ और हो सकता है। इस संसार में हमें यह भरोसा करते हुए कि परमेश्वर हमें वैसे आशीष देता है जैसे उसे अच्छा लगता है, विश्वास से चलना है। हो सकता है कि अनन्तकाल में हमें यह समझा दिया जाए कि जो कुछ परमेश्वर ने हमारे लिए किया उसे हम इस जीवन में देख या समझ नहीं सकते थे।

सारांश

नादाब के जीवन पर एक शक्तिशाली वाक्य रखा जाना आवश्यक है: ''वह ... अपने पिता के मार्ग पर ... चलता रहा'' (15:26)। वह स्वतन्त्र नैतिक प्राणी था। वह बदल सकता था, अलग दिशा में जा सकता था, आत्मिक अगुवा बन सकता था, परन्तु उसने अपने पिता की लीक पर चलना चुना। इतिहास की उंगली उसके जीवन के विषय में लिखती है कि उसने गलत असल की नकल की थी।

हाल ही में मैं ऐसी जगह गया जहां स्थानीय प्रचारक वहां के सुसमाचार प्रचारक का लड़का है। उस जवान प्रचारक में कई अच्छे गुण हैं जो उसके साथ थोड़ी देर रहने के समय मैंने देखे, परन्तु मैं उसकी *प्रशंसा बेहतरीन शब्दों में से एक* के साथ करता हूं कि ''तुम बिल्कुल अपने बाप पर हो!'' उसका पिता एक सुसमाचार प्रचारक था, और वह भी सुसमाचार प्रचारक बन गया। जैसा बाप वैसा बेटा। पौलुस ने लिखा, ''तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं'' (1 कुरिन्थियों 11:1)। नादाब के मामले में उसके बारे में जो *सबसे बुरी बात* कही जा सकती है वह यह आरोप होगा कि ''वह बिल्कुल अपने बाप पर गया!'' ऐसी टिप्पणी हमें उसके पिता की असफलता और उसकी असफलता के बारे में बताती है। परमेश्वर करे कि हमारे बेटों के बारे में सबसे अच्छी बात जो कही जाए वह यह हो कि वे अपने बाप पर हैं, क्योंकि इसका अर्थ होगा कि पिता और पुत्र दोनों सफल रहे हैं!

सीखने के लिए सबक:
गलत असल की नकल न करें।

टिप्पणी

[1]तिब्नी को गिन लिया जाए तो उत्तरी राज्य के बाइस राजा थे।